''मैं उस में दोष नहीं पाता''

(18:1–19:16)

हर गीत का अपना अलग ही मज़ा होता है। कुछ धुनों को सुनकर आपका चेहरा चमक उठता है, और कुछ धुनें ऐसी होती हैं जिनसे आंखों में आंसू आ जाते हैं। कुछ धुनें आपको जीवन के अच्छे दिनों की याद दिलाती हैं और कुछ आपके उदासी के क्षणों को याद कराती हैं। गीतों से यही अपेक्षा रहती है, परन्तु हमें बाइबल की आयतों से भी यही अपेक्षा करनी चाहिए। उनमें भी, अपना ही मज़ा होता है। हम इस पाठ में जिन आयतों का अध्ययन करने वाले हैं वे बाइबल की सबसे निराशाजनक और पीड़ादायक आयतों में से हैं।

सत्रह अध्यायों तक हमने यीशु के जीवन और उसकी सेवकाई की कहानी पढ़ी है। यूहन्ना ने यीशु की कहानी को पाठकों के मन में विश्वास उत्पन्न करने के लिए तरतीब देते हुए लिखा है कि यीशु ने क्या किया और क्या कहा। अध्याय 18 के आरम्भ में, यीशु निर्णायक रूप में क्रूस की ओर जा रहा था जो कि उसके आने का लक्ष्य और उद्देश्य था। भावनात्मक रूप से कठिन इस भाग में तीन पेशियों के बारे में बताया गया है जो यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले कुछ ही घण्टों में हुई थीं: ये पेशियां यीशु, पतरस और पीलातुस की हैं। ये पेशियां तीन बटों वाली रस्सी की तरह परमेश्वर के अपने पुत्र के बारे में संदेश और उसमें विश्वास के महत्व से बुनी हुई हैं।

यीशु की पेशी

अपने चेलों के साथ खाना खाने और प्रार्थना के लिए शाम बिताने के बाद, यीशु किद्रोन की घाटी के पार नगर के बाहर (18:1),[1] बाग में गया जहां वह और उसके चेले अक्सर प्रार्थना करने आते थे। यह स्पष्ट है कि यीशु ने अपनी गिरफ्तारी के लिए सहमति दे दी थी। उसके शत्रुओं को लगा कि वे उसे रात को गिरफ्तार करके उससे चालाकी कर रहे हैं, क्योंकि उस समय लोगों की भीड़ उसकी सुरक्षा के लिए उसके इर्द–गिर्द नहीं होनी थी। वास्तविकता यह थी कि यहूदा और सिपाहियों के लिए उसे ढूंढ़ने के इतने आसान समय का प्रबन्ध स्वयं यीशु ने ही किया था।

महायाजकों और फरीसियों द्वारा सिपाहियों के खोजी दल को उसे पकड़ने भेजा था। बाग में पहुंचने के समय उनके हाथों में लालटेनें, मशालें और हथियार थे। जब यीशु ने उनसे पूछा, ''किसे ढूंढ़ते हो?'' (18:4) तो उनका उत्तर था, ''यीशु नासरी को'' (18:5)। यीशु

के इस उत्तर से कि वह ''मैं ही हूं'' (18:5), वे भय से पीछे हटकर भूमि पर गिर पड़े थे। जब दोबारा यीशु ने उनसे पूछा कि वे किसे ढूंढ़ते हैं तो फिर उनका उत्तर वही था, ''यीशु नासरी को'' (18:8)। एक बार फिर यीशु ने उन्हें बता दिया कि वही वह आदमी है जिसे वे ढूंढ़ रहे थे। अन्ततः उन्होंने यीशु को गिरफ्तार कर बांध लिया और पेशी के लिए यरूशलेम ले गए। उसका व्यवहार गिरफ्तारी से बचने वाले किसी आदमी की तरह नहीं बल्कि एक ऐसे आदमी का आत्मविश्वास से भरा कार्य था जिसे मालूम था कि उस रात होने वाली घटनाओं का क्या महत्व है।

यीशु की पेशी का पहला पड़ाव कायफा नामक महायाजक के ससुर हन्ना का घर था जो स्वयं भी एक पूर्व महायाजक था। इस तथ्य से कि यीशु को उसके घर ले जाया गया सम्भवतः यह संकेत मिलता है कि कायफा के पास पदवी तो थी, परन्तु वास्तविक शक्ति हन्ना के पास ही थी। यीशु से हन्ना के घर उसकी शिक्षाओं और लोगों के उसके पीछे लगने के बारे में प्रश्न पूछे गए। जब उसने उन्हें बताया कि यह कोई रहस्य नहीं था और उसकी शिक्षाएं सब लोगों ने सुनीं और उनका मूल्यांकन किया, तो एक अधिकारी ने इसे हन्ना का ''अपमान'' मानकर यीशु के मुंह पर थप्पड़ मार दिया। उसके बाद, हन्ना ने यीशु को कायफा के पास हाथ बंधे हुए ही भेज दिया।

कायफा के घर से यीशु को रोमी राज्यपाल के सरकारी निवास तक ले जाया गया जो ''किले'' के नाम से प्रसिद्ध था (18:28)।[2] यदि यह यीशु के जीवन के दांव पर लगने का तथ्य न होता तो बाद की घटनाएं उपहासजनक होनी थीं। यहूदियों में, किले को अन्यजातियों का घर माना जाता था। किसी यहूदी के इसमें प्रवेश करने की बात सोची भी नहीं जा सकती थी, और वह भी फसह के पर्व के दौरान![3] यीशु के लिए मृत्यु दण्ड की मांग करने वाले यहूदी अगुओं से बात करने वाले पीलातुस को ही अपने घर से बाहर आना था। अगले कई घण्टों में पीलातुस उन घटनाओं का कुछ अर्थ निकालने और यीशु को छोड़ने के उपाय ढूंढ़ने के लिए कितनी ही बार कभी अंदर और कभी बाहर गया।

पीलातुस ने पहले तो यहूदी अगुओं से कहा, ''तुम ही इसे ले जाकर अपनी व्यवस्था के अनुसार इसका न्याय करो'' (18:31)। पर उन्होंने यीशु को मृत्यु दण्ड देना चाहा, और यह ऐसी सज़ा थी जिसे देने का अधिकार केवल रोमी राज्यपाल को ही था। यीशु को अन्दर ले जाकर, पीलातुस उससे प्रश्न पूछने लगा। उसने पूछा, ''क्या तू यहूदियों का राजा है?'' (18:33)। जब यीशु ने उसे स्पष्ट उत्तर न दिया, तो पीलातुस चिल्ला उठा, ''क्या मैं यहूदी हूं?'' (18:35)।[4] तब यीशु ने उत्तर दिया:

> मेरा राज्य इस जगत का नहीं, यदि मेरा राज्य इस जगत का होता, तो मेरे सेवक लड़ते, कि मैं यहूदियों के हाथ सौंपा न जाता: परन्तु अब मेरा राज्य यहां का नहीं (18:36)।

यीशु से परेशान करने वाली इस बातचीत के बाद, पीलातुस ने ''फिर निकलकर'' (18:38)

यहूदी अगुओं को बताया कि उसे यीशु में कोई दोष नहीं दिखाई दिया। (उसे यह पता नहीं था कि वह कितना सही था!)

पीलातुस को उम्मीद थी कि न्याय के लिए यीशु को वहां लाने वाले लोग उसके बारे में उसकी जांच से संतुष्ट हो जाएंगे। परन्तु ऐसा हुआ नहीं। ''खाल बचाने'' का ढंग बताए जाने पर अगुओं ने इसे मानने से इन्कार कर दिया और उन्होंने एक हत्यारे को छोड़ने[5] और यीशु को क्रूस पर चढ़ाने की मांग की। यीशु पर आरोप लगाने वालों को संतुष्ट करने का प्रयास करते हुए परेशान पीलातुस ने अपने सिपाहियों को उसे कोड़े मारने और उसका ठट्ठा उड़ाने की अनुमति दे दी। तभी उद्धारकर्त्ता के सिर पर कांटों का ताज पहनाकर उसे बैंगनी वस्त्र पहनाए गए।

पीलातुस ने यीशु को अपमानजनक वस्त्र और मुकुट पहने हुए, बाहर ले जाकर यहूदी अगुओं को दिखाया। यदि पीलातुस को उम्मीद थी कि इससे यीशु के प्रति उनकी घृणा कम हो जाएगी, तो यह उसकी बहुत बड़ी गलती थी। वे फिर चिल्लाने लगे, ''उसे क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर!'' (19:6)। पीलातुस ने उनसे कहा कि वे स्वयं ही ले जाकर उसे क्रूस पर चढ़ाएं। जब पीलातुस को बताया गया कि यीशु ने परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया है तो वह उसे मृत्यु दण्ड देने के बजाय डर गया। पीलातुस यहूदियों के परमेश्वर में विश्वास तो नहीं करता था, पर वह *किसी* भी देवता के पुत्र को मारकर उसे क्रोध नहीं दिलाना चाहता था!

यीशु के साथ क्या करने की विकराल समस्या का समाधान ढूंढ़ने के प्रयास में पीलातुस उसे किले के भीतर ले जाकर एक बार फिर उससे प्रश्न पूछने लगा। इस बार जब यीशु ने उसके प्रश्नों के उत्तर देने से इन्कार कर दिया तो पीलातुस ने (शायद चिल्लाते हुए) कहा, ''क्या तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने का अधिकार मुझे है और तुझे क्रूस पर चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है'' (19:10)। यीशु ने उत्तर दिया, ''तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता; इसलिए जिस ने मुझे तेरे हाथ पकड़वाया है, उसका पाप अधिक है'' (19:11)।[6] इस पर, पीलातुस यीशु को छोड़ देने की और भी कोशिश करने लगा।

जब यहूदी अगुओं ने यीशु को छोड़ने के पीलातुस के अंतिम प्रयास को भी ठुकरा दिया तो पीलातुस से और सहन नहीं हुआ। वह यीशु को गब्बता नामक स्थान में ले गया, जहां आधिकारिक निर्णय लिए जाते थे। वहां उसने कहा, ''देखो, यही है, तुम्हारा राजा!'' (19:14) और उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिए उन्हें सौंप दिया। यीशु की पेशी खत्म हो चुकी थी।

न्याय की भाषा में, उस रात की कार्यवाहियां अपमानजनक और एक त्रासदी थीं। जैसा कि यूहन्ना ने बताया है, उस मुकदमे से सिद्ध हो गया था कि यीशु निर्दोष था! सत्ता और राजनीति सच्चाई और तर्क पर हावी रहीं। एक निर्दोष व्यक्ति को केवल इसलिए दोषी ठहराया गया था क्योंकि वह ''गलत लोगों'' के लिए खतरा बन गया था। पर उस रात और अगली सुबह की कार्यवाहियों पर मसीही लोगों का एक अलग परिप्रेक्ष्य है। हम इसे मुख्यत: दर्दनाक त्रासदी के रूप में नहीं बल्कि उदार दान के रूप में देखते हैं। यूहन्ना ने ज़ोर देकर

कहा कि यीशु का प्राण उससे *छीना नहीं गया* था बल्कि उसने इसे अपनी इच्छा से दिया था।

पतरस की पेशी

उस रात दूसरी पेशी पतरस की आत्मिक पेशी थी। हम उसकी कहानी यीशु द्वारा चेलों के पांव धोने से आगे लेते हैं। अपने स्वभाव के अनुसार, पतरस ने उतावली सी प्रतिक्रिया देते हुए, पहले तो यीशु को अपने पांव धोने से मना किया और फिर यीशु से अपना पूरा शरीर धो डालने की बिनती की (13:6-9)। बाद में, जब यीशु ने चेलों को बताया कि वह वहां जा रहा है जहां वे उसके पीछे नहीं जा सकते, तो पतरस ने ज़ोर देकर कहा था कि उसे अपने प्रभु के पीछे चलने से कोई नहीं रोक सकता। उसने कहा था, ''हे प्रभु, अभी मैं तेरे पीछे क्यों नहीं आ सकता? मैं तो तेरे लिए अपना प्राण भी दे दूंगा''(13:37)। तब यीशु ने भविष्यवाणी की थी, ''क्या तू मेरे लिए अपना प्राण देगा? मैं तुझ से सच-सच कहता हूं कि मुर्ग़ बांग न देगा जब तक तू तीन बार मेरा इन्कार न कर लेगा'' (13:38)। पतरस उसकी कल्पना नहीं कर सकता था कि अगले कुछ घण्टों में वह क्या कहेगा और क्या करेगा।

बाद में उसी रात, बाग में, पतरस यीशु को गिरफ्तार करने आए सिपाहियों से लड़ने को तैयार था (18:10)। उसने महायाजक के मलखुस नामक, एक दास पर तलवार चला दी। पतरस ने उसका सिर काटने की कोशिश की होगी परन्तु एक झटके में वह उसका दाहिना कान ही काट पाया। जितनी तेज़ी से यह लड़ाई शुरू हुई थी उतनी ही तेज़ी से समाप्त भी हो गई! यीशु ने पतरस को अपनी तलवार म्यान में डालने के लिए कहा। कहानी में यहां पर, पतरस चेलों में सबसे साहसी और बहादुर लगा था।

पतरस की अपनी पेशी और गंभीर हो गई जब यीशु को महायाजक के घर ले जाया गया। यूहन्ना ने विस्तार से बताया कि इन घटनाओं के बाद पतरस वास्तव में आंगन में ही था। (18:15,16)। द्वार पर खड़ी एक दासी ने पतरस से अन्दर आते हुए पूछ लिया, ''क्या तू भी इस मनुष्य के चेलों में से है?'' (18:17)। उसने उत्तर दिया था, ''मैं नहीं हूं।'' जो आदमी थोड़ी देर पहले ही यीशु को गिरफ्तार करने आए सिपाहियों के दल से लड़ने को तैयार था, अब वह केवल एक दासी की बात से ही डर गया था!

रात बहुत ठण्डी थी, सो दासों और सिपाहियों ने कोयले जलाकर सेंकने के लिए आग जलाई। पतरस भी इन लोगों के साथ आग सेंक रहा था, कि उनमें से एक ने कहा, ''क्या तू भी उसके चेलों में से है?'' (18:25) । दूसरी बार पतरस ने यीशु के साथ किसी प्रकार का सम्बन्ध होने से इन्कार करते हुए कहा, ''मैं नहीं हूं।'' पतरस अभी अपने दूसरी बार के इन्कार की कड़वाहट को पचा भी नहीं पाया कि एक और दास ने कह दिया, यह आदमी बाग में होने वाली घटनाओं के समय वहीं था और उस आदमी का रिश्तेदार था जिसका कान पतरस ने तलवार से काट दिया था। उस आदमी ने पूछा ''क्या मैं ने तुझे उसके साथ बारी में न देखा था?'' (18:26)। यूहन्ना लिखता है कि ''पतरस फिर इन्कार कर गया और तुरन्त मुर्ग़ ने बांग दी'' (18:27)। यीशु की पेशी होने के बाद उसे निर्दोष ठहराया गया था, जबकि पतरस को पेशी होने के बाद डरपोक पाया गया था।

सुसमाचार की पुस्तकें हमेशा तीन अलग-अलग स्तरों पर पढ़ी जानी चाहिए। पहला स्तर यीशु के जीवन में होने वाली घटना का प्रश्न है। दूसरे स्तर पर यह बात है कि सुसमाचार के लेखक प्रारम्भिक कलीसिया को वह कहानी फिर से सुनाकर क्या समझाना चाहते थे। तीसरे स्तर पर, हमें पूछना चाहिए कि हमारे जीवन में सुसमाचार की पुस्तक का क्या अर्थ है।

''पहले स्तर'' पर पतरस की पेशी को पढ़ने से हमें पता चलता है कि पतरस ने यीशु का तीन बार इन्कार किया। ''दूसरे स्तर'' पर पढ़ने से हमें एक संदेश मिलता है जो सुसमाचार की पुस्तक में पहले ही[7] कई बार दिया जा चुका है, अर्थात यह कि मसीही लोगों को अपना विश्वास सार्वजनिक रूप से दिखाने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए, चाहे ऐसा करते हुए उन्हें सताव ही क्यों न झेलना पड़े। ''तीसरे स्तर'' पर पढ़ने से हमें यीशु के प्रति अपनी वचनबद्धता में अपने विश्वास और अंगीकार में दृढ़ होने के लिए कहा जाता है। संसार चाहे हमारा ठट्ठा उड़ाए या हमें दुख पहुंचाए।

मेरा एक अच्छा मित्र 1995 में मिशनरी बनकर अफ्रीका में गया। वह प्रभु से प्रेम करता है और दूसरों में उसके सुसमाचार को बांटने के लिए वचनबद्ध है। एक विदेशी मिशनरी होने के कारण वह जोशीले मसीही के रूप में प्रसिद्ध है। अपनी पहली रिपोर्टों में से एक में उसने अफ्रीका जाने वाले अपने जहाज़ की उड़ान के बारे में लिखा:

> ... पिछले बसंत में युगांडा जाते हुए हवाई जहाज़ पर मेरे साथ बैठे एक आदमी ने कुछ ऐसा कहा जो परछाई की तरह मेरे पीछे है। मेरे उसे यह बताने पर कि मैं यीशु मसीह का प्रचार करने के लिए युगांडा जा रहा हूं, इस यूरोपीय व्यक्ति ने मुझसे कहा, ''क्षमा करना, पर क्या अफ्रीका में पहले से कोई देवता नहीं है?'' मुझे नहीं पता था, इसलिए मैंने उसका कोई उत्तर नहीं दिया।

मेरे विचार से, मेरे इस मित्र को उस अनुभव से जो परेशानी हुई, वह यीशु की गिरफ्तारी की रात पतरस को महसूस होने वाली परेशानी जैसी थी। मैं भी, जानता हूं कि सब कुछ शांत होने पर डरने का क्या अर्थ होता है। यूहन्ना रचित सुसमाचार हमें पतरस की पेशी की कहानी हमारे संसार की षड्यन्त्रकारी शक्तियों के बारे में चेतावनी देने के लिए है जो हमें असोचनीय काम अर्थात अपने प्रभु का इन्कार करने का कारण बनती हैं!

पीलातुस की पेशी

उस रात किसी असावधान दर्शक के विचार से केवल यीशु की ही पेशी थी। परन्तु यूहन्ना रचित सुसमाचार दिखाता है कि अपने ही ढंग से पतरस और पीलातुस की भी पेशी हो रही थी। पतरस की वचनबद्धता की परीक्षा हुई थी और पीलातुस के सामने संसार का सबसे बड़ा प्रश्न था कि ''तुम यीशु के साथ क्या करोगे?'' कुछ ही घण्टों में पीलातुस के सामने वे सब प्रश्न होने थे जो तीन से अधिक वर्ष तक उसके चेलों के सामने थे।

यीशु को पीलातुस के सामने लाने पर, उस राज्यपाल की पहली टिप्पणी यही थी, ''तुम ही इसे ले जाकर अपनी व्यवस्था के अनुसार उसका न्याय करो'' (18:31)। पीलातुस को यहूदियों या उनके लगातार हो रहे विवादों की कोई चिंता नहीं थी। परन्तु यीशु वाली मुश्किल दूर होने वाली नहीं थी सो पीलातुस अगले कई घंटों तक इस ''यहूदी विवाद'' का शांतिपूर्वक हल ढूंढ़ने का प्रयास करता है। ऐसा करते हुए, उसे यीशु के साथ क्या करने के प्रश्न से भी जूझना पड़ा था।

पीलातुस की पहली प्रतिक्रिया, जैसा हमने अभी-अभी देखा है (18:31), उदासीनता भरी थी। उसे यीशु की कोई चिंता नहीं थी। वह तो यीशु को अपने सामने से दूर भगाना चाहता होगा। यीशु के बारे में उदासीनता सबसे आम व्यवहार है। अधिकतर लोग उसके बारे में सोचना भी ठीक नहीं समझते। परन्तु पीलातुस यीशु के बारे में निर्णय लेने से बच नहीं पाया था और न ही आज हम बच सकते हैं!

यीशु को पीलातुस का दूसरा जवाब उसका तिरस्कार करना था। राज्यपाल द्वारा यीशु से पहली बार प्रश्न पूछने के समय, कहा था, ''क्या मैं यहूदी हूं? तेरी ही जाति और महायाजकों ने तुझे मेरे हाथ सौंपा, तू ने क्या किया है?'' (18:35)। पीलातुस की नज़र में यीशु केवल परेशान करने वाला एक और यहूदी था। आज भी बहुत से लोग यीशु को वैसा ही देखते हैं। उनका उद्देश्य केवल यीशु और उसकी शिक्षाओं का विरोध करना है।

यीशु पर पीलातुस की अगली प्रतिक्रिया उससे दूर रहना थी। पहली बार प्रश्न पूछने के बाद, उसने यीशु नासरी के बारे में निर्णय लेने से बचने का पूरा प्रयास किया। पीलातुस फसह के कारण यीशु को छोड़ देने का हल सुझाकर (18:38, 39), केवल उसके बारे में स्पष्ट निर्णय लेने से बच रहा था। क्या आपने आज यीशु पर ऐसी ही प्रतिक्रिया देखी है? लोग यीशु के बारे में कुछ कहने से बचने के लिए काम, मनोरंजन या गाने बजाने या पार्टियों में लग जाते हैं!

यीशु को पीलातुस का चौथा जवाब उसका भय था। पीलातुस ने सुना कि यीशु ने परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया है, तो वह डर गया (19:8)। पीलातुस के पास यहूदियों को जीवन और मृत्यु देने का अधिकार तो था, पर वह उस बंदी गलीली से डर गया था जो उसके सामने पेशी के लिए खड़ा था। मैं ऐसे कई मिशनरियों को जानता हूं जिन्होंने उन देशों में प्रवेश किया जहां सीमा पार करने पर लिखा हुआ मिलता है, ''चेतावनी! कोई बंदूक या बाइबल ले जाने की आज्ञा नहीं!'' आज यीशु मसीह के सुसमाचार की सामर्थ के आगे शक्तिशाली सरकारें भी कांपती हैं, इतना भय तो उन्हें युद्ध के हथियारों से भी नहीं लगता है।

अन्त में पीलातुस ने यहूदी अगुओं के दबाव में आत्मसमर्पण करके यीशु पर प्रतिक्रिया व्यक्त की है। पीलातुस जानता था कि यीशु निर्दोष है परन्तु उसमें डटकर न्याय का साथ देने का साहस नहीं था। इसके बजाय उसने आसान रास्ता चुना और यीशु को क्रूस पर चढ़ाने की अनुमति दे दी। इस प्रकार, पतरस और पीलातुस की कहानियां मिलती-जुलती हैं।

पीलातुस की कहानी से यह पता चलता है कि कोई व्यक्ति यीशु के बारे में निर्णय लेने

से बच नहीं सकता। हम उसकी उपेक्षा करने का प्रयास कर सकते हैं, पर उसकी उपेक्षा हो नहीं सकती। एक समय आएगा जब हमें उसे ''हां'' या ''नहीं'' कहना ही पड़ेगा। हम सब पर उसके विरुद्ध होने या कम से कम उससे दूर होने का दबाव तो अवश्य पड़ता है, परन्तु यीशु के बारे में कुछ कहने का निर्णय हमें लेना ही पड़ेगा।

सारांश

जिन तीन पेशियों पर हमने विचार किया है उनमें सुसमाचार और हमारे द्वारा इसे ग्रहण करने का वर्णन मिलता है। यीशु को कटघरे में खड़ा किया गया था और वह निर्दोष पाया गया था। पतरस और पीलातुस की तरह ही अब हम भी कटघरे में हैं। हमारे लिए प्रश्न यह है कि ''क्या हम उसके लिए डटकर खड़े होंगे जो हमारे लिए मर गया?'' दबाव पड़ने पर, क्या हम इतने मजबूत होंगे कि कह सकें कि ''मैं यीशु नासरी का चेला हूं''? उसके बारे में हमें निर्णय लेना ही पड़ेगा। *आप* यीशु के साथ क्या करेंगे?

पाद टिप्पणियां

[1]भारी बारिश में, किद्रोन का नाला यरूशलेम नगर की दीवारों को जैतून के पहाड़ से अलग करते हुए नगर की पूर्वी ओर घाटी के नीचे से बहता है। जैतून के पहाड़ पर गतसमनी का बाग है (मत्ती 26:36), जिसका उल्लेख इस आयत में है। [2]रोमी राज्यपाल का निवास कैसरिया नगर की बन्दरगाह में ही था, जो अधिकतर रोमी संस्कृति वाला क्षेत्र था। पर यह राज्यपाल फसह के पर्व के विशेष महत्व व ऐसे अवसर पर रोम के विरुद्ध यहूदियों के विद्रोह के जोखिम के कारण पर्व के दौरान यरूशलेम में अपनी राजनीतिक और सैनिक उपस्थिति दिखाता था। (आखिर, फसह का पर्व यहूदियों के एक और दमनकारी अर्थात मिसर से छूटने के समय को ही तो याद कराता था!) [3]देखें प्रेरितों 10:28; 11:3,12. [4]पवित्र शास्त्र में पीलातुस के साथ अधिकतर प्राचीन इतिहासकारों से अधिक उदारता वाला व्यवहार किया जाता है जो उसे एक क्रूर रोमी राज्यपाल के रूप में देखते थे जो यहूदियों को तुच्छ समझता था और उन्हें कष्ट देने का कोई अवसर नहीं खोजता था। इस्राएल में अपने दस वर्षों के दौरान, पीलातुस ने मन्दिर के भण्डार से चोरी की थी, नगर में घृणित रोमी ''मूर्तियों'' को लाकर दंगा करवाया था, गलीली आराधकों के एक दल की हत्या करवाई थी (लूका 13:1) और गिराजीम पर्वत पर सामरियों के एक बड़े झुंड को मरवाया था। पीलातुस यीशु से यह कहकर कि, ''क्या मैं यहूदी हूं?'' ताना दे रहा था, क्योंकि उसने यहूदियों के लिए अपनी घृणा को छुपाने का कोई प्रयास नहीं किया था। [5]बरअब्बा ने हाल ही के एक राजनैतिक विद्रोह में हत्या की थी (लूका 23:19; प्रेरितों 3:14)। [6]यीशु द्वारा अपना प्राण अपनी इच्छा से देने का विषय-वस्तु पहले ही यीशु के सम्बन्ध में अच्छे चरवाहे के रूप में बताया गया था (10:17,18)। [7]निकुदेमुस (यूहन्ना 3) और जन्म के अंधे (यूहन्ना 9) की कहानियां इस विषय-वस्तु के दो पहले उदाहरण हैं।